# दिए जल उठे

## पाठ का सार

दांडी कूच की तैयारी के सिलसिले में वल्लभभाई पटेल सात मार्च को 'रास' पहुँचे थे। वहाँ लोगों के आग्रह पर पटेल ने जो संक्षिप्त भाषण दिया उसमें उन्होंने कहा ''भाइयो और बहनो, क्या आप सत्याग्रह के लिए तैयार हैं?'' बस इतना कहते-कहते पटेल गिरफ़्तार कर लिए गए। यह गिरफ़्तारी स्थानीय कलेक्टर शिलिडी के आदेश पर हुई थी क्योंकि शिलिडी को पटेल ने ही पिछले आंदोलन के समय अहमदाबाद से भगा दिया था। बोरसद की अदालत में लाए जाने पर पटेल ने जज के सामने अपना अपराध कबूल कर लिया। उन्हें 500 रुपए जुर्माना और तीन महीने की जेल की सज़ा दी गई। उस समय गाँधी जी साबरमती आश्रम में थे, जहाँ उन्हें पटेल की गिरफ़्तारी की सूचना मिली। गाँधी जी इस गिरफ़्तारी से बहुत क्षुब्ध हुए। इस दशा में गाँधी जी ने दांडी कूच की तारीख बदलने की संभावना बताई और अनुमान किया गया कि अभियान 12 मार्च से पहले शुरू हो सकता है।

पटेल की गिरफ़्तारी पर देशभर में प्रतिक्रिया हुई। इस पर मोहम्मद अली जिन्ना ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की''सरदार वल्लभभाई पटेल की गिरफ़्तारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्राता के सिद्धांत पर हमला है। भारत सरकार एक ऐसी नज़ीर पेश कर रही है जिसके गंभीर परिणाम होंगे।'' गाँधी जी के 'रास' पहुँचने के समय वह कानून लागू था, जिसके तहत पटेल को गिरफ़्तार किया गया था। 'रास' में गाँधी जी का भव्य स्वागत हुआ था। सत्याग्रही बाजे-गाजे के साथ 'रास' में दाखिल हुए। वहाँ गाँधी जी को एक धर्मशाला में ठहराया गया जबकि बाकी सत्याग्रही तंबुओं में रुके। रास की आबादी केवल तीन हज़ार थी लेकिन उनकी जनसभा में बीस हज़ार से ज्यादा लोग थे। अपने भाषण में गाँधी जी ने पटेल की गिरफ़्तारी का जिक्र करते हुए कहा, ''सरदार को यह सज़ा आपकी सेवा के पुरस्कार के रूप में मिली है। उन्होंने सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े का उल्लेख किया और कहा कि ''कुछ मुखी और तलाटी 'गंदगी पर मक्खी की तरह' चिपके हुए हैं। उन्हें भी अपने निजी तुच्छ स्वार्थ भूलकर इस्तीफ़ा दे देना चाहिए।'' गांधी जी ने फिर कहा ''आप लौग कब तक गावों को चसूने में अपना योगदान देते रहेगें, सरकार ने तो लटू मचा रखी है उसकी आरे से क्या अभी तक आपकी आखें ँ खलुी नहीं हैं?

सत्याग्रही शाम छह बजे रास से चले और आठ बजे कनकापुरा पहुँचे। उस समय लोग यात्रा से कुछ थके हुए थे और कुछ थकान इस आशंका से थी कि मही नदी कब और कैसे पार करेंगे। नियमों के अनुसार उस दिन की यात्रा कनकापुरा में गाँधी के भाषण के बाद समाप्त हो जानी चाहिए थी लेकिन इसमें परिवर्तन कर दिया गया। यह तय किया गया कि नदी को आधी रात के समय समुद्र का पानी चढ़ने पर पार किया जाए ताकि कीचड़ और दलदल में कम-से-कम चलना पड़े । रात साढ़े दस बजे भोजन के बाद सत्यागही नदी की ओर चले। अँधेरी रात में गाँधी जी को लगभग चार किलोमीटर दलदली शमीन पर चलना पड़ा।

रात बारह बजे महिसागर नदी का किनारा भर गया। पानी चढ़ आया था। गाँधी जी घुटने भर पानी में चलकर नाव पर चढ़े। महात्मा गाँधी, सरदार पटेल और जवाहरलाल नेहरू के नाम के नारों से दिशाएँ गूँज उठीं। महीसागर के दूसरे तट पर भी स्थिति इससे कुछ भिन्न न थी। डेढ़ किलोमीटर तक पानी और कीचड़ में चलकर गाँधी जी रात एक बजे उस पार पहुँचे और सीधे विश्राम करने चले गए। गाँव के बाहर नदी के तट पर उनके लिए झोंपड़ी पहले ही तैयार कर दी गई थी। गाँधी जी के पार उतरने के बाद भी तट पर दिये लेकर लोग खड़े रहे। अभी सत्याग्रहियों को भी उस पार जाना था। शायद उन्हें पता था कि रात में कुछ और लोग आएँगे जिन्हें नदी पार करानी होगी।

**शब्दार्थ**

- निषेधाज्ञा - मनाही का आदेश
- कबूल - स्वीकार
- धारा - कानूनी नियम
- सत्याग्रह - स्तय के लिए आग्रह
- क्षुब्ध - अशांत
- कूच - अभियान के लिए रवाना होना
- झलक - एक नज़र देखना
- संक्षिप्त - छोटी
- प्रतिक्रिया - किसी कार्य के परिमाणस्वरूप होने वाला कार्य
- भर्त्सना - निंदा
- पारित - पास करना
- नजीर - उदाहरण
- रियासतदार - रियासत या इलाके का मालिक
- प्रयाण - यात्रा
- पुस्तैनी - पीढ़ियों से चला आ रहा
- आधिपत्य - प्रभुत्व
- तुच्छ - क्षुद्र
- बयार - हवा
- संहार - नाश करना
- हुक्मरानों - शासक
- प्रतिध्वनि - किसी शब्द के उपरांत सुनाई पड़नेवाला उसी से उत्पन्न शब्द,गूँज